

**भारत सरकार**  
**विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय**  
**वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग**  
**लोक सभा**  
**अतारांकित प्रश्न संख्या 3220**  
**(उत्तर देने की तारीख 19.03.2025)**

**पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी**

**3220 श्री दिनेशभाई मकवाणा:**

क्या **विज्ञान और प्रौद्योगिकी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) का ब्यौरा क्या है जिसे पारंपरिक ज्ञान की जानकारी हासिल करने के लिए भारतीय डिजिटल ज्ञान भंडार के रूप में स्थापित किया गया है; और
- (ख) इस संबंध में क्या प्रगति हुई है तथा इससे क्या लाभ प्राप्त हुए हैं?

**उत्तर**

**राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)**  
**विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान**

**(डॉ. जितेन्द्र सिंह)**

- (क) पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) भारतीय पारंपरिक ज्ञान का एक पूर्व कला (प्रायर आर्ट) डेटाबेस है, जिसे वर्ष 2001 में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और भारतीय चिकित्सा और होम्योपैथी विभाग (आईएसएमएंडएच विभाग, तत्कालीन आयुष मंत्रालय) द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित किया गया था। बौद्धिक संपदा अधिकारों के माध्यम से भारतीय पारंपरिक ज्ञान (टीके) के दुरुपयोग को रोकने के लिए टीकेडीएल की स्थापना की गई थी। टीकेडीएल में वर्तमान में आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और योग जैसे आईएसएम से संबंधित प्राचीन ग्रंथों की जानकारी निहित है। संस्कृत, हिंदी, अरबी, फारसी, उर्दू, तमिल, भोटी आदि स्थानीय भाषाओं में मौजूद चिकित्सा और स्वास्थ्य के प्राचीन ग्रंथों की जानकारी को टीकेडीएल डेटाबेस में पाँच अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं, अर्थात् अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश और जापानी में लिपिबद्ध किया गया है। इस प्रकार टीकेडीएल भारतीय टीके की जानकारी के एक सुदृढ़ पूर्व कला (प्रायर आर्ट) डेटाबेस के रूप में कार्य करता है, जो सम्पूर्ण विश्व के पेटेंट कार्यालयों में पेटेंट परीक्षकों द्वारा समझी जाने वाली भाषाओं तथा प्रारूप में जानकारी उपलब्ध कराता है। इस प्रकार टीकेडीएल पेटेंट कार्यालयों द्वारा गलत तरीके से पेटेंट दिए जाने को रोकता है।

इस डेटाबेस तक पहुँच सम्पूर्ण विश्व के उन पेटेंट कार्यालयों को दी जाती है जिन्होंने सीएसआईआर के साथ नॉन-डिसक्लोजर एक्सेस एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए हैं, ताकि उनके साथ दायर पेटेंट आवेदनों के संदर्भ में टीकेडीएल साक्ष्यों की खोज की जा सके। टीकेडीएल पूर्व कला (प्रायर आर्ट) डेटाबेस वर्तमान में 17 पेटेंट कार्यालयों के लिए उपलब्ध है - जिसमें भारतीय पेटेंट कार्यालय (पेटेंट, डिज़ाइन और ट्रेडमार्क के महानियंत्रक), यूरोपीय पेटेंट कार्यालय, अमेरिकी पेटेंट कार्यालय, जापानी पेटेंट कार्यालय, जर्मन पेटेंट कार्यालय, कनाडाई पेटेंट कार्यालय, फिलीपींस पेटेंट कार्यालय, चिली पेटेंट कार्यालय, ऑस्ट्रेलियाई पेटेंट कार्यालय, यूके पेटेंट कार्यालय, मलेशियाई पेटेंट कार्यालय, रूसी पेटेंट कार्यालय, पेरू पेटेंट कार्यालय, स्पेनिश पेटेंट और ट्रेडमार्क कार्यालय, डेनिश पेटेंट और ट्रेडमार्क कार्यालय, नेशनल इंडस्ट्रियल प्रॉपर्टी इंस्टिट्यूट (आईएनपीआई, फ्रांस) और यूरोशियन पेटेंट संगठन शामिल हैं।

पेटेंट कार्यालयों द्वारा टीकेडीएल डेटाबेस के उपयोग के अतिरिक्त, सीएसआईआर-टीकेडीएल इकाई भारतीय पारंपरिक ज्ञान से संबंधित पेटेंट आवेदनों पर तीसरे पक्ष की टिप्पणियाँ/अनुदान-पूर्व विरोध भी दर्ज करती है। टीकेडीएल के माध्यम से यह रक्षात्मक संरक्षण भारतीय पारंपरिक ज्ञान को दुरुपयोग से बचाने में प्रभावी रहा है, और इसे वैश्विक बेंचमार्क माना जाता है।

- (ख) अब तक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों और योग अभ्यासों से कुल 515788 फॉर्मूलेशन/तकनीकें टीकेडीएल डेटाबेस में लिपिबद्ध की गई हैं। इसके अंतर्गत आयुर्वेद में 148456, यूनानी में 264196, सिद्ध में 88403 और सोवा रिग्पा में 8197 तथा योग अभ्यासों में 6536 फॉर्मूलेशन/तकनीकें शामिल हैं। टीकेडीएल साक्ष्यों के आधार पर अब तक 375 पेटेंट आवेदनों को या तो अस्वीकार कर दिया गया है, संशोधित किया गया है अथवा वापस ले लिया गया है/त्याग दिया गया है, जिससे भारतीय पारंपरिक ज्ञान को दुरुपयोग से बचाया जा सका है।

\*\*\*\*\*